International Journal of Applied Research2017; 3(6): 1380-1381

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 1380-1381
www.allresearchjournal.com
Received: 10-03-2017
Accepted: 12-04-2017

डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत), सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत), सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

भारतीय शास्त्रीय संगीत में विद्युत प्रचार संसाधनों का योगदान

डॉ. रंजना ग्रेवर

सारांश
संगीत एक ऐसी कला है इसमें नज़रिया अपना–अपना वाली कहावत चरितार्थ होती है। मानव के लिए मनोरंजन का साधन, संतों के लिए मोक्ष प्राप्ति का माध्यम, प्रेमियों के जीवन का उल्लास, एकांतवास में मित्र, विरहाग्नि से पीड़ित मन को शान्ति प्रदान करने वाला और अपाहिज एवं अपादाग्रस्त प्राणियों की सहचरी ही नहीं अपितु इस प्रकार के सैकड़ा गुणों के अतिरिक्त इस कला में और भी अनेक विशेषताएं है, जो अप्रत्यक्ष और अदृश्य होते हुए भी कोई इसे अस्वीकार नहीं कर सकता। यदि हम संगीत के इतिहास को विशेषतौर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास को थोड़ा पीछे मुड़कर देखें, तो वास्तविकता यह है कि शास्त्रीय संगीत इतना लोकप्रिय कभी नहीं रहा जितना आज के युग में। इस बात का प्रमाणित करने के लिए हमें इतिहास पर दृष्टिपात करना होगा।

कूटशब्द : संगीत, विद्युत प्रचार संसाधन, शास्त्रीय संगीत

प्रस्तावना
भारतीय संगीत का सबसे प्राचीन ग्रंथ भरत का नाट्यशास्त्र माना गया है क्योंकि यह ग्रंथ नाटक की दृष्टि से लिखा गया। उस समय नाट्य में भी संगीत का प्रयोग होता था (जो आज भी किसी हद तक होता है) इसलिए संगीत सम्बन्धी भी कुछ सूत्र इसमें पाये जाते है। इन सूत्रों की व्याख्या परवर्ती संगीताचार्यों ने विभिन्न ग्रंथों के रूप में कुछ सूक्ष्म गुत्थियों को सुलझाने का प्रयत्न किया। यह कार्य अभी चल ही रहा था कि मुसलमानों का भारत में आगमन हुआ और यहां उनका शासन स्थापित हो गया। यही से भारतीय संगीत अपनी मौलिकता खोकर मुस्लिम शासन की छाया में पलने लगा। जो संगीत अध्यात्मिकता का मार्ग था वह अब लौकिक रसिकता में खोकर पूर्णतः मनोरंजन का साधन बन गया। इसके सम्मान को और अधिक ठेस पहुंची, जब यही संगीत वैश्याओं के कोठों पर पहुंच गया। गलत हाथों में बागडोर होने के कारण सभ्रान्त परिवारों से इसकी दूरी बनती चली गई। संगीत जो कि मनुष्य मात्र की सम्पत्ति थी, इस युग में कुछ कलाकारों के हाथों में सिमट कर रह गई। सामान्य जनता और शास्त्रीय संगीतज्ञों के मध्य यह खाई बढ़ती चली गई और आधुनिक युग (अर्थान 1900 वी शताब्दी) तक आते–आते इतना विकृत रूप हो चुका था कि शास्त्रीय संगीत की चर्चा छिड़ते ही सामान्य लोग उसे व्यंग की दृष्टि से देखने लगे।
आधुनिक समय के स्वर प्रलयकाल में शुद्ध अथवा परिवर्तित शास्त्रीय संगीत का टाप स्थिर, सुशक्षित और आबाद रहे, इस कार्य में बहुत से माध्यमों की प्रयोग में लाया गया। शास्त्रीय संगीत को सीखने–सीखाने और जन साधारण में इनका प्रचार प्रसार करने में electronic media का सशक्त प्रभाव है। यह electronic media क्या है ? वास्तव में electronic media विज्ञान के वह यंत्र है जो किसी भी विषय वस्तु की हमें सटीक जानकारी देते है। अर्थात् आधुनिक युग के वह विभिन्न वैज्ञानिक यंत्र जो कृत्रिम ऊर्जा से संचालित होते है और वायु मंडल से दृश्य और श्रव्य की तरंगों को हमेशा के लिए कैद करने की क्षमता रखते है। किसी भी कला को सीखने–सीखाने, कला प्रर्दशन करने या उस कला का आनंद उठाने के लिए किसी न किसी दृश्य या श्रव्य माध्यम की आवश्यकता पड़ती है। इन दृश्य और श्रव्य माध्यमों का electronic media ने क्षेत्र बढ़ा दिया है। आज यह आवश्यक नहीं है कि बड़े बड़ संगीतज्ञों को संगीत सम्मेलनों में ही जाकर सुना जाए।
आधुनिक युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल भारत में ही नहीं अपितु दूरगामी देशों में भी बहुत प्रचलित हो गया है। इनका श्रेय हमारे संगीतज्ञों को तो जाता ही है लेकिन
उनके इस कार्य को सुगम बनाया electronic media ने electronic media अर्न्तगत Radio, Recording Disc, C.D. Cassettes, T.V. Movies और कम्पयूटर को ले सकते है। इन माध्यमों का संगीत पर इतना प्रभाव पड़ा कि इसके प्रचार–प्रसार के लिए यह वरदान साबित हुआ।

आकाशवाणी द्वारा संगीत के विभिन्न कार्यक्रम जैसे भक्ति संगीत, शास्त्रीय संगीत पर आधारित फिल्मी नगमें संगीत सरिता, फिल्मी नगमों का प्रोग्राम, एक ही कलाकार से, एक ही फिल्म सं. लोकगीतों का कार्यक्रम हर तरह का संगीत तो प्रसारित होता ही है. इससे बढ़कर शास्त्रीय संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम भी दिया जाता है, जिसका प्रसारण हिन्दुस्तान का हर आकाशवाणी केन्द्र करता है, जिसे रेडियो द्वारा ही सुना जाता है।

देश के बड़े–बड़े गायकों और वादकों का गायन–वादन हम इस माध्यम द्वारा सुन सकते है। इसके अतिरिक्त भी प्रत्येक आकाशवाणी केन्द्र द्वारा अन्य शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है। कलाकार लोग भी इससे लाभान्वित हुए है। उन्हें इस माध्यम से कुछ पारिश्रमिक मिलता है, जो कि सबके जीवन–यापन हेतु आवश्यक है। उनकी कला से दूसरे लोग भी लाभान्वित होते है और शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार में सहायता मिलती दूसरा सशक्ता माध्यम है क्पेबए ब्व्क्ण् Cassettes और टेप। बड़े–बड़े गायकों और बादकों द्वारा गाये–बजाये गये विभिन्न रागों की Cassettes, Discs और टेप आज के युग में आसानी से उपलब्ध हो जाती है। रेडियो पर तो प्रसारण का समय निश्चित होता है लेकिन Cassettes के द्वारा हम मन चाहे कलाकार को अपनी सुविधानुसार किसी भी समय . सुनने के लिए स्वतन्त्र है।

T.V. और Movies ने संगीत जगत में एक क्रान्ति ला दी। टेलीवजिन पर भी अच्छे कलाकारों द्वारा गायन वादन तो होता ही है समय–समय पर विभिन्न शास्त्रीय नृत्यों का भी प्रर्दशन होता है। T. V. द्वारा कलाकार को साक्षात देखने और सुनने का मौका मिलता है और उस कलाकार के हम एकाकार हो जाते है।

मध्यकालीन युग में जो संगीत हम से कोसों दूर था, जिसे व्यविचार का र्पयाय मान लिया गया था, जो संभ्रात परिवारों की शान के खिलाफ था, उसी संगीत को हर घर के आंगन तक पहुंचाने का श्रेय जाता है, भारतीय सिनेमा जगत को। चाहे कितने ही संगीत सम्मेलन होते, कितने ही शास्त्रीय संगीतों का प्रसारण आकाशवाणी द्वारा होता और India Today या H. M. V. की Cassettes उपलब्ध होती, अगर सिनेमा जगत न होता तो शास्त्रीय संगीत उतना भी लोकप्रिय ने होता जितना आज है।

कहा जाता है–

मज़ा कहने का तब, जब तुम कहो और हम समझें।
यहां तो शक है कि आप अपना कहा भी समझें।।

जैसा कि पहले ज़िक्र हुआ है कि जो विषय जितना गूढ़ होगा उसको समझने वाल उतने ही कम लोग होगे। शास्त्रीय संगीत की इस जटिलता को कुछ सरल बना कर पेश किया फिल्म जगत ने। इस माध्यम से शास्त्रीय संगीत का प्रयोग ऐसे होने लगा जो सीधे–सीधे जन सामान्य के मर्म–स्थल को स्पर्श कर सके। बड़े–बड़े संगीतज्ञ बड़ी–बड़ी संगीत सभाएं कर–कर के इतनी प्रसिद्धि न पा सके जितनी सिनेमा के माध्यम से।

सार्थक, सशक्त भावप्रधान गीतों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत की जड़ों को सिनेमा जगत में सुदृढ़ बनाया गया। कितने ही गीत शास्त्रीय संगीत पर आधारित हर घर आंगन में गूजने लगे। डी. वी. पलुस्कर और अमीर खां साहब द्वारा गाया गीत (झनक–झनक पायल बाजे) आज भी महफिलों और ऊंचे घरानों की शान है। फिल्म 'सुर संगम' में राजन–साजन मिश्रा के गाये गीतों को देश के कोने–कोने में सुना जा सकता है। पं० रविशंकर, पं० भीमसेन जोशी, उस्ताद बड़े गुलामअली खां साहब अपने संगीत द्वारा सिनेमा जगत को प्रकाशमय कर चुके है।

शब्दों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत का आनन्द जन साधारण बखूबी उठाता है। शास्त्रीय संगीत पर जिन फिल्मी गीतों का निर्माण किया गया, उन्हें सुनकर शास्त्र पक्ष के ज्ञाता शास्त्र पक्ष का और शास्त्र पक्ष से अन्जान लोग गीत में शब्दों के माध्यम में शास्त्रीय संगीत का आनंद उठाते हैं। इस तरह का संगीत सुनते सुनते वे लोग भी शास्त्रीय संगीत को समझना और सुनना सीख जाते है, जिन्होंने कभी विधिवत रूप से इसकी शिक्षा नहीं ली।

सिनेमा जगत के शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाया, यह ठीक है. लेकिन इसका अपने ही पक्ष में किया। विभिन्न दृश्यों को भावानुकूल दर्शाने के लिए उनकी अनुभूतियों को प्रेषित करने के लिए अनुकूल रागों का प्रयोग किया जाता है। शास्त्रीय संगीत को नियमों में वहीं तक रखा जाता है, जहां तक लोक–रंजन होता रहे।

आधुनिक समय मिली–जिली संस्कृति का समय है। जाने–माने संगीतज्ञ पं0 रविशंकर जी East meets west पर research कर चुके है। और उन्होंने 1982 के एशियाड में इसी आधार पर संगीत निर्देशन किया था। पं0 रविशंकर जी को इतनी ख्याति मिली कि शास्त्रीय संगीत की थोड़ी सी जानकारी रखने वाला व्यक्ति पहले उनकी ब्मजजम खरीद कर सुनता है। इनके अतिरिक्त भी बहुत सी जानी–मानी हस्तियों का गायन वादन, संगीत जिज्ञासुओं के घरों में इन माध्यामों द्वारा गुंजायमान होता है। हांलाकि ऐसे कलाकारों को बहुत कम लोग सामने बैठकर सुन पाते है, लेकिन इसी media के माध्यम द्वारा ही उनकी ख्याति चहुँ ओर फैली है। निःसन्देह संगीत गुरूमुखी विद्या है। परन्तु विज्ञान ने उसे यंत्रमुखी बनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य का शिष्य कोई कंप्यूटर हो सकता है तो उस कंप्यूटर के भी अनक शिष्य हो सकते है। यदि तानसेन के समय में रिकॉर्ड की सुविधा होती तो आज भी हमार लिए विश्व के किसी भी भाग में रिकॉर्ड बजाकर इच्छित रूप से वर्षा कराना संभव हो जाता।

क्योंकि वर्तमान समय में लता मंगेशकर जैसे कलाकारों की आवाज का जादू किसी चमत्कार से कम नहीं है। फिर भी मल्हार से वर्षा, मालकोंस से पत्थर पिघलना. दीपक राग से दीपक जलना जैसे चमत्कार देखने से हम लांग वंचित है। या फिर इनक विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह लगता है।

म्समबजतवउपब media के ये यंत्र हमारी ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुके हैं, जिनके बिना हमारा निर्वाह नहीं।

जनतन्त्र के इस युग में किसी भी तरह की कोई भी कला कछ लोग अपनी बनाकर नहीं रख सकते। शास्त्रीय संगीत को इन यंत्रों द्वारा इस प्रकार बोधगम्य करना होगा कि इसमें मूल आधार सुरक्षित रहे, इनके नियमों की अवपालना होती रहे. किन्तः वह जनसाधारण की समझ मे आने लगे।

यही वैज्ञानिक यंत्र शास्त्रीय संगीत को शियासत के चंगुल से छुड़ाकर लोगों के बीच लेकर आया। सा रे ग म जैसे कार्यक्रमों ने बहुत लोकप्रियता हासिल की। इस प्रकार के कार्यक्रम लोकप्रिय तो हुए ही है, आम जनता भी संगीत की परम्पराओं में रूचि दिखाने लगी है। ऐसे विभिन्न कार्यक्रमों के प्रभाव से संगीतज्ञों की पहचान होने लगी है।

Electronic Media तो जैसे बना ही संगीत के लिए है और इसी के दम से हम कह सकते है कि विश्व का सारा संगीत आज हमारी उंगलियों पर है।

संदर्भ

1. विज्ञापन और संगीत का सम्बन्ध - डॉ कुमार निर्मल मोहन
2. संगीत निबन्ध संग्रह - हरिचन्द्र श्रीवास्तव
3. शारदा संगीत प्रकाश - नारायण संत